भाषा की समृद्धि में कहानी की भूमिका

बसंत राघव

भाषा की समृद्धि में कहानी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कहानी समाज का व्यापक विश्लेषण करती है। अन्य विधाओं के अपेक्षाकृत कहानी अधिक ग्राह्य होने के कारण अधिक पढ़ी और याद रखी जाती है। भारत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का देश है और हिंदी हमारी मातृभाषा है, हिंदी भाषा ही हमें एकता के धागे में पिरोती है, इसलिए हिंदी की समृद्धि के लिए कहानी की भाषा बहुत ज्यादा व्यावहारिक और सरल होनी चाहिए।कथाकारों को आंचलिक शब्दों का उपयोग कुछ इस तरह करना चाहिए कि वह स्वयं अर्थ का रसास्वादन कराने में समर्थ हो सके। मुहावरों, कहावतों से भी भाषा मंजती, सजती और संवरती है। कहानी का उद्देश्य स्पष्ट और जनसरोकारी होना चाहिए। रूमानी प्रेम या देहयष्टि अथवा मांसलता को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानियां हमारा मंनोरंजन तो करती हैं, परन्तु ऐसी कहानियों से समाज को भला क्या लाभ? प्रेमचंद की जनसरोकार से जुड़ी कहानियां आज भी प्रासंगिक क्यों हैं? इस पर आज के कहानीकारों को गंभीरता से विचार करना चाहिए। जो समाज को नई ऊर्जा और नई सोच दे ,जो मानवीय संवेदनाओं को उकेरे ,वैसी ही कहानियाँ हमे सृजित करनी चाहिए। जो समाज को समाज से जोड़े, जो संस्कृतियों में समन्वय स्थापित करे, जो वृहद पाठक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करे, ऐसी ही भाषा से सृजित कहानियों की आज दरकार है। कहानी मानवीय संबंधों की भीतरी जांच पड़ताल का जरिया है, वह समय -समाज दोनों को एक साथ परिभाषित करने में समर्थ होती है, इसलिए भाषा के क्षेत्र में कहानीकार की जवाबदेही अपेक्षाकृत और अधिक बढ़ जाती है।

अपने समय ,समाज और राजनीति के साथ मानवीय संबंधों के ताने - बाने को समझने के लिए कहानी एक सशक्त माध्यम है। कहानी की भाषा वर्तमान समय की बोलचाल के शब्दों, और वैज्ञानिक शब्दावली एवं टेक्नोलॉजी के वाक्यांशों की भी मांग करती है। कहानीकार को अपने विषय एवं पात्रों के अनुरूप भाषा संरचना पर भी काम करना होता है जो कि हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए जरूरी है। अभिव्यक्ति की क्षमता शब्दों में निहित होती है और वर्तमान समय को दिखाने के लिए इनकी जरूरत कहानीकार के साथ साथ पाठक भी शिद्दत से महसूस करता है।कठिन शब्द, उबाऊ विषय एवं बोझिल भाषा से पाठक वर्ग बिदक जाते हैं, इसपर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। भाषा की सुघड़ता, उसकी सहजता और प्रवाहमयता में है, सरल भाषा का प्रचार - प्रसार वृहद होता है, संस्कृत भाषा दुर्गम -दुरूह कठिन क्लिष्ट और अभिजात्य वर्ग की भाषा होने के कारण ही सिमटती गई और प्रचलन से बाहर होती चली गई।उसकी जगह हिंदी और इतर भाषाओं का विस्तार होता चला गया। इसलिए कहानी की भाषा परिस्थिति अनुकूल सरल , सहज होनी चाहिए। भाषा की समृद्धि में कथाकार की भी विशिष्ट भूमिका होती है। कहानी लेखक अपने भाषा कौशल के द्वारा पाठकों की याददाश्त को मजबूती प्रदान करता है। उनके ज्ञान और बुध्दि को विस्तारित ही नहीं करता बल्कि संवाद कला में भी उन्हें दक्ष करता है। कहानी अपने साथ अपनी भाषा को भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करती है। हिंदी में लिखी जाने वाली कहानियां इन सभी विशेषताओं से लैस होकर भाषा की समृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहेंगी, ऐसी मेरी स्पष्ट मान्यता है।

एक बात और रखना चाहूंगा कि भारत की पारंपरिक कहानियों एवं क्षेत्रीय लोककथाओं को भी हिंदी भाषा में पुनःप्रकाशित करने की जरूरत है, क्योंकि इनकी जड़ें बहुत गहरी हैं। ये मनुष्य जीवन के अंतःसंबंधों एवं जीवन मूल्यों को समझाने एवं वृहद समाज से हमें जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। अनुभवजनित कहानियां समाजोन्मुख होती हैं , उनका स्थायी महत्व भी होता है। उनकी शैली लोगों को आकृष्ट करती है ,प्रभावित करती है, इसलिए पाठकों को लम्बे समय तक कहानी याद रहती है। काल्पनिक ,वायवीय या आभासी संबंधों को लेकर लिखी गई कहानियां अल्पकालिक और क्षणिक प्रभाव छोड़ती हैं। कहानी के कारण भी हमारी हिंदी की लोकप्रियता दुनिया भर में बढ़ी है। हिंदी कहानियां पढ़ने के लिए लोग हिंदी सीख रहे हैं। वैसे भी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी तीसरे स्थान पर है।

मार्शल कोहेन ने कहा है "भाषा मनुष्य के भाव विनिमय का साधन है और भाषा ही मनुष्य और पशुता के बीच पार्थक्य रेखा खींचती है।" इसलिये भाषा मनुष्य के निर्माण में और संस्कृति की जड़ में अहम भूमिका निभाती है।जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है हिंदी को लोकप्रिय बनाने में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। क्योंकि भाषा दादी नानी की कहानी से जुड़ी है।कहानी का प्रारंभ दादी-नानी से होता है और प्रतिदिन हमको उससे शिक्षण मिलता है। यद्यपि उसमें गीत का भी हाथ होता है लेकिन जहां तक कहानी का प्रश्न है उसमें एक रोचकता होती है, एक शैली होती है, एक प्रवाह होता है। सबसे पहले बचपन में दादी नानी की कहानी को सुनना आरंभ करते हैं। यद्यपि गीत का भी प्रवाह होता है जो कि ग्राहय है लेकिन इससे ज्यादा भूमिका कहानी की होती है, क्योंकि कहानी में शब्दों का, वाक्यों का प्रयोग, बोलचाल की भाषा सुन कर पढ़ कर उसे बोलचाल में हम उतारते हैं , इसलिए कहानी की भूमिका कहीं ज्यादा होती है। भाषा के निर्माण में या हिंदी को गढ़ने में प्रेमचंद का जो स्थान है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने साढ़े तीन सौ कहानियां ,पन्द्रह सोलह उपन्यास, दो अनुवाद की किताब, तीन बाल कहानियां लिखी हैं। प्रेमचंद को पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी सीखी।यहाँ यह उल्लेखनीय है कि शरदचंद्र और रवींद्रनाथ की रचनाओं को पढ़ने के लिए लोगों ने बांग्ला भाषा सीखी। यह कहानी का ही योगदान है। इसके बाद जो रचनाकार आए उनमें फणीश्वरनाथ रेणु बहुपठित हुए। चतुरसेन शास्त्री जिन्होंने करीबन साढ़े चार सौ कहानियां लिखी हैं और उनकी ये कहानियां इतनी लोकप्रिय हुई हैं कि उन्हें पढ़ने के लिए लोगों ने हिंदी सीखी। ठीक है कि संगीत के लिए गीत आवश्यक है लेकिन कोई भी फिल्म का निर्माण हो या फिर टेलीविजन सीरियल, धारावाहिक बनाना हो, उसके लिए कहानी की आवश्यकता होती है।कहानी से ही पटकथा लिखी जाती है।आज आप जानते हैं कि किसी को लोकप्रिय बनाने में, मनोरंजन के साधन के रूप में, उपदेश, संदेश या प्रेरणा के रूप में फिल्मों का कितना बड़ा योगदान है। इसका एक उदाहरण यह है कि उपकृत साहू बनारी ग्राम का रहने वाला फिल्म 'कर्तव्य' देखता है जिसमें कि धमेंद्र फारेस्ट रेंजर की भूमिका में है। फिल्म से प्रभावित उपकृत साहू परीक्षा देता है और फारेस्ट रेंजर बन जाता है । डी. एफ.ओ. की परीक्षा देता है वहां भी वह सलेक्ट हो जाता है और बड़े पद पर उसे पोस्टिंग मिल जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर फिल्मों से प्रेरणा मिलती है तो उस प्रेरणा के लिए कहानी आवश्यक है , क्योंकि बिना कथा के फिल्म नहीं बन सकती बिना कथा के कोई सीरियल, धारावाहिक नहीं बन सकती । इस तरह कथा की भूमिका होती है। हिन्दी को समृद्ध करने के लिए फणीश्वरनाथ रेणु और तमाम वो कहानीकार जो कहानी लिखे वे सभी महत्वपूर्ण काम कर गए। 'उसने कहा था' कहानी जो अत्यंत चर्चित हुई। उस पर फिल्म भी बनी। प्रेमचंद की रचना सदगति पर भी फिल्म बनी।उनके उपन्यास गबन ,गोदान,शतरंज का खिलाड़ी, हीरा मोती पर भी फिल्म बनी। उपन्यास कहानी का वृहद रूप है।इस तरह देखा जाए तो साहित्यिक कहानी और उपन्यास पर बहुत फिल्में बनी हैं। चँदामामा बाल साहित्य की बात करें तो चँदामामा पत्रिका की कहानी कितनी लोकप्रिय हुई। इसमें विक्रम और बेताल की लोकप्रियता सबसे ज्यादा है। आज भी गीत को सबलोग नहीं पढ़ पाते न ही समझ पाते हैं, लेकिन कहानी को सब लोग पढ़ लेते हैं और समझ भी लेते हैं और उससे हिंदी का संस्कार विकसित होता है । इस तरह कहानी के बिना हिंदी साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि कथा का अर्थ ही है जो कहा जाय। सामान्य बोलचाल, सामान्य संवाद भी एक कथा ही है। हिंदी की समृद्धि में कथा की भूमिका गीतों से कहीं ज्यादा है।

हिंदी के प्रमुख कथाकारों में प्रेमचंद, चतुरसेन शास्त्री, जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', यशपाल, जैनेंद्र कुमार, भीष्म साहनी, अमृता प्रीतम, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, राजेन्द्र यादव, अमरकांत, उषा प्रियंवदा, मन्नु भंडारी, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश, भगवती प्रसाद वाजपेयी,मोहन राकेश,मन्नू भण्डरी, धर्मवीर भारती, महादेवी वर्मा, गिरिराज किशोर, धीरेन्द् अस्थाना, शिवप्रसाद सिंह,रामदरश मिश्र,महेन्द्र वशिष्ठ,अमरेन्द्र मिश्र,राजेन्द्र उपाध्याय, शीतांशु भारद्वाज, दूधनाथ सिंह, मालती जोशी, ओमप्रकाश बाल्मीकि, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, माधवराव सप्रे, निर्मल वर्मा आदि प्रमुख हैं, जिन्होंने कहानी के क्षेत्र में हिंदी भाषा को समृद्ध किया।

वर्तमान में राजकमल चौधरी, गंगाप्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह,प्रभात त्रिपाठी, संजीव, जया जादवानी, मनीष वैद्य, रमेश शर्मा, डॉ. देवधर महंत, हंसा दीप, शिव कुमार शिव, डॉ. निरुपमा राय, शायान शफी कुरेशी, शैल अग्रवाल, रंजना जायसवाल, प्रगति गुप्ता, जया आनंद, नीलम कुलश्रेष्ठ, डाँ.जे.के डागर, श्याम बिहारी महतो भी खूब लिख रहे हैं। इनकी मौलिक प्रतिभा , इनकी सृजनधर्मिता निश्चय ही हिंदी भाषा की समृद्धि में अपना अपूर्व योगदान दे रही है। इन सारी चर्चाओं के माध्यम से हम इस बिंदु पर पहुंचते हैं कि भाषा की समृद्धि में कहानी का महत्वपूर्ण योगदान है, उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।